International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume V, Issue IV, December 2018 Available online at: www.ijaur.com

"भारत में गिरते स्त्री–पुरूष अनुपात के कारण"

डॉ0 नीलेश प्रताप सिंह
प्राचार्य जे. के. महाविद्यालय, गुढ़, जिला–रीवा (म.प्र.)

सारांश– 21वीं सदी में प्रवेश करने के बाद भी हम लड़कियों को वैज्ञानिक उपलब्धि के दुरूपयोग द्वारा उन्हें जन्म लेने के अधिकार से वंचित कर रहे हैं। बच्चे के जन्म से पहले गर्भावस्था में अल्ट्रासाउण्ड एवं एम्नियोसेन्टेसिस परीक्षण द्वारा बच्चे में कोई दोष नहीं हैं, यह पता किया जाता है परन्तु इस परीक्षण के द्वारा गर्भस्थ शिशु के लिंग को भी पता लग जाता है।

मुख्य शब्द – स्त्री–पुरूष अनुपात अल्ट्रासाउण्ड एवं एम्नियोसेन्टेसिस परीक्षण।

प्रस्तावना –

भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में से है, जहाँ महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में बहुत कम है। सामाजिक लिंग भेद महिला–पुरूष के बीच का अंतर दिखाता है, पर यह अंतर जैवकीय यानि कुदरती नहीं है। कुदरत ने तो कन्या भ्रूण को ज्यादा ताकतवर बनाया है और इसी कारण महिलाओं की जीवन प्रत्याशा भी पुरूषों की तुलना में अधिक होती है। भारत में घटता शिशु लिंगानुपात देश के भविष्य के लिए अच्छा संकेत नहीं है। लुप्त होती बालिकाओं की संख्या बालिका शिशु तथा महिलाओं की समाज में अच्छी स्थिति का परिचायक नहीं हैं। बालक शिशु के जन्म की इच्छा एवं प्रसन्नता के लिए अनेक आर्थिक और सामाजिक कारण हैं, जिनके प्रभाव से लड़के को अधिक महत्व तथा लड़की के जन्म को कम महत्व दिया जाता है। वास्तव में कितना विरोधाभाष है कि भारतीय समाज अपने लड़के के लिए बहू तो चाहता है, पर बेटी को जन्म नहीं देना चाहता। इसीलिए एक नारा भी दिया जाने लगा है कि 'बेटी नहीं बचाओगें, तो बहु कहा से लाओगे।

मानव ने तो कुदरत के नियम, कानून एवं कुदरत के सृजन को ही ताक पर रख दिया है और वह प्रकृति से छेड़खानी कर रहा है। अल्ट्रासाउण्ड से यह ज्ञात होने पर की लड़की पैदा होगी तो उस भ्रूण को ही गर्भपात में तबदील कर दिया जाता है। दूसरी ओर आज के समाज में देहज की बढ़ती हुई मांग ने तो कन्या भ्रूण–हत्या को इतना सींच दिया है कि वह एक पौधे से बढ़कर एक वटवृक्ष की भांति प्रकट हो गयी है, जिसकी शीतल छाया में पुत्री विहीन माता–पिता चैन की नींद सोना चाहते हैं, मगर यह वटवृक्ष की शीतल छाया नहीं वरन् मीठा जहर जरूर है जो शनैः शनैः पूरे समाज व राष्ट्र में फैलता जा रहा है। जिस दिन इन वटवृक्ष की जड़े घर–घर में फूटेगी उस दिन हर घर की दीवारें चटकनें लगेंगी और समाज बिखरने लगेगा और प्रारंभ होगा एक भीषण संघर्ष का युग यदि यूं ही कन्या भ्रूण–हत्या का दौर चलता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब कई दुष्परिणाम हमारे सामने होंगे और उनका निराकरण हमारे बस से बाहर होगा।

हमारा देश जहाँ सर्वत्र गरीबी का साम्राज्य है, जनसंख्या विस्फोटक गति से बढ़ रही है। निरक्षरता तथा दहेज–प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों में समाज आज भी जकड़ा हो, वहाँ भ्रूण–हत्या और गर्भपात की अनुमति देना कोढ़ में खाज का काम करेगी। निस्संदेह विगत दशकों में स्त्री–पुरूष अनुपात घटकर बहुत कम हो चुका है। यदि यह प्रवृत्ति बरकरार रही तो देश को समस्याओं एवं कभी न खत्म होने वाले भयावह दुष्परिणामों का सामना करना पड़ेगा।

विश्लेषण –

पुरूषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या घटती जाना एक गंभीर चिंता का विषय है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, जापान, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया आदि विकसित देशों में प्रति हजार पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 1000 या 1080 के बीच है। फिर क्या कारण है कि भारत में स्त्रियों की संख्या कम होती जा रही है? स्त्री–पुरूष अनुपात के असंतुलन के लिए उत्तरदायी कारण कौन से है? जाँच–पड़ताल के बाद निम्नलिखित कारण सामने आते हैं :

1. **बालिका भ्रूण–हत्या** – भारत में बालिका भ्रूण–हत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो स्त्री–पुरूष अनुपात में आई गिरावट का एक सर्वप्रमुख कारण है। आठवें दशक में नए चिकित्सा अनुसंधानों से गर्भ परीक्षण तथा भ्रूण–हत्या सुविधाओं को तेजी से विस्तार हुआ है। उसी तेजी से स्त्री–पुरूष अनुपात गिरा है। यूनिसेफ के अनुसार अकेले एशिया में दस करोड़ महिलाओं का अस्तित्व इसलिए खत्म हो गया क्योंकि जान–बूझकर मादा भ्रूण की हत्या कर दी गई। आश्चर्य तो इस बात का होता है कि अनेक प्रज्ञा पुरूष परिवार नियोजन की इस क्रूर पद्धति से चिंतन और विचलित नहीं दिख रहे हैं।
2. **प्रजनन काल में उच्च मृत्यु–दर** – भारत में प्रजनन काल के दौरान स्त्रियों में उच्च मृत्यु–दर भी गिरते हुए लिंगानुपात का कारण है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार 15 से 44 वर्ष के प्रजनन आयु वर्ग में स्त्रियों की मृत्यु दर पुरूषों की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक है। तकरीबन दो–तिहाई स्त्रियाँ रक्ताल्पता से ग्रस्त हैं। भारत में समुचित देखभाल के अभाव में लगभग 40 प्रतिशत स्त्रियों की मृत्यु हो जाती है।
3. **लड़कियों की तुलना में लड़कों के प्रति आकर्षण का भाव** – हमारी मान्यता यह है कि वंश को बनाए रखने के लिए बेटा जरूरी है और इसी कारण भारत में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों के प्रति अधिक आकर्षण का

भाव देखा जाता है। लड़कियों की संख्या अगर कम हो रही है तो जाहिर है कि लड़कों के प्रति आकर्षण ज्यादा है।

4. **दहेज–प्रथा** – दहेज–प्रथा आज के समाज का कोढ़ है। भारत में स्त्री–पुरूष अनुपात को प्रभावित करने में दहेज–प्रथा जैसे सामाजिक तत्व भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह विश्वास है कि शिक्षा के प्रसार से दहेज जैसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगेगा। दुर्भाग्यवश दहेज प्रथा का रूप विकृत और विकराल होता जा रहा है। इस कारण लोग पुत्रों को ज्यादा चाहते हैं इसलिए गर्भ–परीक्षण के पश्चात ज्ञात मादा भ्रूण की हत्या गर्भ में करा देते हैं।
5. **निर्धनता** – सारी समस्याओं की जड़ गरीबी हैं। भारत जैसे देश में जहाँ अभी भी लगभग 30 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करती हो, वृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के अभाव के कारण बेटे को ही वृद्धावस्था का बीमा समझा जाता हो, तो निश्चित रूप से स्त्रियों का अनुपात पुरूषों की तुलना में कम ही रहेगा।

स्त्री–पुरूष का अनुपात बिगड़ना एक सामान्य घटना नहीं है। यह एक गंभीर विषय है, जो हमारे पिछले गत दशकों में उत्पन्न हो गया है। यह स्थिति हमारे हित में नहीं है। यदि यह स्थिति आगे भी कायम रही तो परिणाम बड़े भयावह हो सकते हैं। गत वर्षों से लड़कियों की संख्या में काफी गिरावट आई है। यह गिरावट भारतीय लोगों की संकुचित मानसिकता को स्पष्ट करती है।

अतः स्पष्ट होता है कि ''लड़कियों की तादाद में यह कमी इस बात की सूचक है कि चोरी–छिपे मादा भ्रूणों की गर्भ में भी ही बड़े पैमाने पर हत्या हो रही है। इससे एक बात साफ है कि उम्र के इस पड़ाव में लड़कों और लड़कियों की तादाद का यह विशाल अंतर आगे चल कर मिटाये नहीं मिटेगा और इसके बुरे परिणाम आने वाले वर्षों में पूरी जनसंख्या को आक्रांत करते रहेंगे।'' यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने मादा भ्रूणों के गर्भपात को सुलभ कराने वाली तकनीकों पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन आज भी मादा भ्रूणों की हत्या हो रही है।

निष्कर्ष –

अतः यह स्पष्ट है कि स्त्रियों की घटती संख्या का एक ओर बड़ा कारण है महिला स्वास्थ्य के क्षेत्र में चिकित्सा तकनीक का बढ़ता हस्तक्षेप। इस तकनीक का विकास तो महिला स्वास्थ्य की जटिलताओं को आसान बनाने के लिए हुआ था, किन्तु व्यवहार में स्थिति पूर्णतः विपरीत हो रही है। सोनोग्राफी ने एम्नियोसेन्टेसिस पद्धति को भी पीछे छोड़ दिया है। एम्नियोसेन्टेसिस का उद्भव भी विकृत गर्भ का पता लगाने के लिए हुआ था। परन्तु इसने मादा भ्रूण–हत्या का मार्ग प्रशस्त किया। सोनोग्राफी ने इस रास्ते को और भी आसान बना दिया और मादा भ्रूण हत्याओं की संख्या अनगिनत बना दी है। पुत्र चाह की लालसा समाज को कहाँ ले जाएगी कहना मुश्किल है? किन्तु हाँ पुत्र जन्म देने वाली के स्वास्थ्य को विकृत करने वाली तस्वीर का इन सबके सामने है।

संदर्भ –

1. परमार, जबर सिंह एवं कुमार, संजय, 'भारत की हृदयस्थली म.प्र. विस्तार में', अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इंडिया) लिमिटेड, मेरठ, उ.प्र., 2011
2. पाण्डेय, आनंद कुमार, 'म.प्र. सामान्य अध्ययन', हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2015
3. सिद्दीकी, शादाब अहमद, 'म.प्र. संपूर्ण अध्ययन', उपकार प्रकाशन, आगरा, 2008
4. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, सांख्यिकी विभाग सतना, रीवा, सीधी
5. अगनानी, मनोहर, 'कहाँ खो गईं बेटियाँ', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
6. घनश्याम, डी.एम., 'फीमेल फीटिसाइड एण्ड डाडरी सिस्टम वन इंडिया इंटरनेशनल वूमन कांफ्रेस', जेम्स कुक यूनिवर्सिटी, टाउन्सविले, आस्ट्रेलिया, 2002
7. द्विवेदी, प्रीति, 'कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या शिशु हत्या : मानव अस्तित्व पर प्रहार', म.प्र. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान जर्नल, 2014
8. पालकीपाल, एन., 'वी.द पीपुल', यू.एस. बी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014
9. मिश्र, एस.के. एवं पुरी, बी.के., 'भारतीय अर्थव्यवस्था', हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 2015
10. प्रीति, द्विवेदी, कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या शिशु हत्या : मानव अस्तित्व पर प्रहार', म.प्र. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान जर्नल, 2014
11. दास, गुप्ता, एम. एक्सप्लेनिंग एरियाज मिसिन्ग वुमनः ए न्यू लुक एट द डाटा पापुलेशन एण्ड डेवलपमेंट रिव्यू, अंक 31(3), 2005
12. विश्व स्वास्थ्य संगठन ;भ्द्धए रिपोर्ट, 2010
13. बेदी पुनीत का अध्ययन, मनोहर अगनानी की पुस्तक, 'कहाँ खो गई बेटियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
14. अग्निहोत्री, सतीश, मनोहर अगनानी की पुस्तक, 'कहाँ खो गई बेटियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
15. 'बेटे को लोरियाँ और बेटी के लिए दुआएँ', अक्षय भारत, समाचार पत्र पर प्रकाशित लेख, 26.05.2011
16. भारतीय जनगणना 2011
17. मिश्र एस.के. एवं पुरी बी.के., 'भारतीय अर्थव्यवस्था' हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2015.
18. दास गुप्ता, एम एक्सप्लेनिंग एरियाज मिसिन्ग वुमनः ए न्यू लुक एट द डाटा पापुलेशन एण्ड डेवलपमेंट रिव्यू, अंक 31 (3) 2005 पृ.–529.